

①

॥आ०॥३॥॥

॥ श्रीराम विजय द्वात्रिंशतिमोऽध्यायप्रारंभः ॥



(2)

॥७॥॥३२॥

प्रीर॥
॥१॥

प्रीगणेशायनमः॥ शिशिताकांतयिनमः॥ मत्तवच्छत्रिभुवनेश्वर॥ सुवेकाचकिंरणरंगधिर॥
जैसनिराश्रनमिंपूर्णचद्र॥ तैसारधुविरशोमनसे॥१॥ रावणाशिकुलसमाचरा॥ करुनि
अहिमहिचासंकार॥ सुवेकाचकाजालारधुविर॥ गर्जतिवाल्मरजयजयकारे॥२॥ रावणपर
मचिंताक्रांत॥ हृदईजाठविलाईद्रजित॥ तं कमठकाटेमनात॥ हृणैकायव्यर्थवांचोनि॥३॥
दिपेविणजैसैसदन॥ किंनशिक्कावांचुनवदन॥ किंबुंबकावाचुनिनयन॥ स्वांचव्यर्थनशो
मे॥४॥ ईद्रजितविणलंक॥ तैशिशुन्याहिसदरा॥ जैसंबोलतांराक्षसनायका॥ आवेश
बहुतचढियेला॥५॥ हृणैलंकैमाजिलजवचंदक॥ सिंध्यकरनचलासकक॥ बैशिभाझाहोता
प्रबक॥ रणतुरेवाजोलागलि॥६॥ सर्वेनिघालेउरलेप्रधान॥ जैसामगनिवेशिलारोहिणिर
मण॥ चालुरंगहकेशिरावण॥ लंकेबाहेरनिघाला॥७॥ पदांतिदकभश्चरध॥ त्यवेकोणक्रीर
लगणित॥ पर्वतासमानगजबहुत॥ कोट्यानकोटिचलिले॥८॥ सहस्रसुर्यांचेतजलोपता

॥विजई॥
॥१॥

(2A)

॥आ०॥३२॥

॥श्रीराम॥

तैसारावणाचामुख्यरथ॥ त्यावरिशस्त्रंमंडिल॥ लंकनाथवैसला॥१॥ रणमंडळाआलादशकिं
दर॥ देखोनक्रोधावलेकपिविर॥ घेउनशिक्कापर्वततरुवर॥ हाकदेतचालिले॥१०॥ रावणेंचा
पास्यलाउनबाण॥ करिलाजालाघोरसंधान॥ बाळरिंपर्वताचापजन्य॥ अरिसेनेवरिपाडि
ला॥११॥ असंख्यालसेडिलेबाण॥ तिनकडिपर्वतफोडुन॥ पिष्टवतजैसेंक्रतून॥ सेनेकडिहिरपा
डिले॥१२॥ चपकेहुनबाणतिह्य॥ दशमुखसेडिलेदारण॥ सोडुनसंग्रामाचंगन॥ बाळरग
णमाघारले॥१३॥ जैसेंदेखोनरणरंगधिरा॥ अयोध्यानाथप्रचंडविरा॥ कोदंडचढउनिसत
रा॥ लाविलाशरतेकाकिं॥१४॥ अग्निशिखादलाकपुरा॥ मगउगानराहेवैश्वानरा॥ रक्षमचा
लोनयेतांव्याघ्र॥ सहसास्थिरनकेचि॥१५॥ तैसाप्रतापकिरधुनंदन॥ विषकुंठवद्यजगन्मा
हुन॥ दशकुंठासलक्षुन॥ सोडिलाबाणतेकाकिं॥१६॥ असंभाव्यरामाचेबाण॥ सुटलेदिव्य
चापापासुन॥ जैसेंचतुराचेमुखातुन॥ अपारशब्दनिघति॥१७॥ किंमेचमुखिवहुनअवधारा॥

॥विजई॥

3

॥२॥

अपारनिधितोयधारा॥ किंवाकारापासुनअवधारा॥ ध्वनिजैश्यानुठति॥ १५॥ किंमुठमायेपा
सुनयेकसरं॥ असंख्यजिवशुद्धिउज्जारे॥ तैसंयेकावाणापासुनत्वरं॥ असंख्यशरीरनिधति॥ १६॥
सुटतांअजुनप्रमंजन॥ जठह्जायवितकेन॥ तैसंरक्षसद्वच्छिन्नाभिन्न॥ बहुतजालेंतेका
किं॥ १७॥ जैसंदेखतांदशकंदरे॥ प्रेरितिकेअसंख्यअस्त्रे॥ परितितुकेहिराजिवनेत्रे॥ हेका
मानेनिवारितं॥ १८॥ जैजेअस्त्रटाकिद्विषक॥ याहुनिपेरिविशेषरघुविर॥ जैसाप्रहृतिशा
स्त्रांचाकिवार॥ वेदांतिउजवियेकाशब्द॥ १९॥ विलहुरियांसहितसरितापीति॥ येकदंश्चिगि
ठिअगस्ति॥ किंतिमिरजाठचिवस्ति॥ उजवतागसस्तीजैविउरेना॥ २०॥ जैसामेघवर्षतांअ
पार॥ वणवाविश्वेसमय॥ तैसंराघवापुढनचालेअस्त्र॥ दशकंदरतटस्स॥ २१॥ पुतचेशव
हुतक्रूरिति॥ परित्याहुतांतारिनचालति॥ किवाशुजतांभातताप्रति॥ मेघमंडककेविबाधे॥ २२॥
जैसंदेखोनरावण॥ कोपातठजालादासण॥ विचस्तनक्राढिलेपांचबाण॥ किंतेपंचप्राणहुतांतचि॥ २३॥

॥२॥

किंप्रियाभीचिरेपंतवता॥ किंवाक्कादिब्बापंचविद्युक्लता॥ लहनुनजनकजामात॥ सोडिता
 जालारावण॥ २७॥ राघवेयोजिलेनिवारण॥ तोंजकस्मातआलेपांचबाण॥ सचिदानदतनु
 मेदुन॥ पैलिकडेसपले॥ २८॥ पंचशरमेदुनगेले॥ परिरामचेवज्रगणनचळे॥ जैसेंपंचप्राण
 चेनिमेळे॥ मारितनढेकेकल्पंति॥ २९॥ हाणतांकुठारतिहण॥ दहनजायसोडुनस्थान॥ किं
 वर्षतांजपारघन॥ जेचकबैसकसोडिना॥ ३०॥ किंनिदकनिंदितिजपार॥ नचळेसाधुचें
 तर॥ किंप्रन्हादासलवितंविस्वार॥ परस्वधिरसोडिना॥ ३१॥ तैसेंरघुपतिचेंगणगमि
 र॥ चढलेनाहिंजणुमात्र॥ रामशिमेदलेपंचशर॥ हणोनिरावणतोषला॥ ३२॥ यावीर
 राजाधिराजरघुनाथ॥ परमचतुररणपीडित॥ चापासलाउनिबाणसस॥ दशकंठावीरसो
 डिले॥ ३३॥ दशमुखचेंहृदयफेडुन॥ पडलंकेशिगेलेससबाण॥ लेवेथेनेंरावण॥ मुर्छाये
 उनपडियेला॥ ३४॥ राघवतनुजतिसकुमार॥ मेदुनिगेलेपंचशर॥ तैदस्वेनिसौमित्र॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ३५ ॥

(५)

मेहं कृतनिउचं वळला ॥ ३५ ॥ पाठिशिवा लुनिरधुनं दन ॥ सौमित्रं मडिले वज्रठाण ॥ सोडुनि
अर्थचंद्रबाण ॥ सारथि मरितारवणच ॥ ३६ ॥ अणिकसेडिले दशबाण ॥ दहिधनुष्ये
पाडिले छेदुन ॥ तों पुढें धावोनि विभिषण ॥ अष्टबाणसेडिता जाला ॥ ३७ ॥ रावण रथिचे
अष्टतुरंग ॥ विभिषणें मरिले सवेग ॥ सवेंच येका बाणें अव्यंग ॥ ध्वजहि रवालें पाडिला ॥
॥ ३८ ॥ दुसरा बाणुन स्यंदन ॥ त्यावरि बैसला रावण ॥ जैसा क्षोभला प्रचयान ॥ तसवर्ण
ते विजाला ॥ ३९ ॥ मग ब्रह्मशक्ति परमदातण ॥ ते विभिषणावरि घेरिरावण ॥ अनिवार
कि देखोन ॥ पुढें लह्यु मण जाहला ॥ ४० ॥ जैसा अस्त्रयेतां दारन ॥ पुढें होय करि चेंवोठण ॥ तैसा
ते उन्मिळारि मण ॥ विभिषणा पुढें जाहला ॥ ४१ ॥ शक्तिये तजै शिसौ दामिनि ॥ राघवानुजें
बाणसेडुनि ॥ गगनि त्रय आग कृतनि ॥ असुरवाहिनि वरि पाडित ॥ ४२ ॥ जैसा अविधिने
जपतां मंत्रा ॥ होय आपलाच संकार ॥ तैशिशक्ति पडतां असुर ॥ दग्ध बहुत जाहले ॥ ४३ ॥

॥ विजई ॥

॥ ३१ ॥

शक्तिव्यर्थगेलजाणोन ॥ विभिषणाप्रतिबोलेरावण ॥ सौमित्राचेपाठिशिद्धोन ॥ कांरेसं
 ग्रामकरितेशि ॥ ४४ ॥ अहिराक्षसकुटुंबगनायक ॥ आत्मातजन्मलाशितुंजंबुक ॥ कु
 कभिमानसांडुनदेख ॥ शरणगेलशि शत्रुते ॥ ४५ ॥ अरेविभिषणाशतमुखो ॥ वैरिया
 समिकालेशिमउयका ॥ दिनवदेनंबोकोनिद्रिका ॥ प्राणबापुलारक्षिलारे ॥ ४६ ॥ अहि
 तुजपाविलेईतकेदिन ॥ जैसेअस्मातधातववदान ॥ किवाप्रलभुगासन ॥ व्यर्थजैसेमि
 रविले ॥ ४७ ॥ किवानारिजेकांपक्षिण ॥ शंभुसिंधिलिनेउन ॥ तैसेंतुसंपावण ॥ व्यर्थनाहि
 केलेरे ॥ ४८ ॥ विभिषणहृणवुद्धिहिना ॥ दशप्रियाकपटियामठिणा ॥ मिशरणआलेरघु
 नंदना ॥ जन्ममरणतितजाले ॥ ४९ ॥ म्यातुंसंसांगितलेहित ॥ परितुंनायकशिउन्मत ॥
 तुझाकुवक्ष्यजालासमस्त ॥ तुजहिराघव ॥ वधिल ॥ ५० ॥ जैसेविभिषणबोलत ॥ ओ
 थंकरनरावणकांपत ॥ करकरांस्वाउनदांत ॥ स्वासोस्वासवकितबोले ॥ ५१ ॥ तुजराख

श्रीराम॥
॥४॥

(5)

तोसौमित्र॥ तरियाचाचकरिनचुर॥ माझाईद्रजिलविजईपुत्र॥ येणेचिगिकिलानिकुंबके॥५२॥
अलिकायासरिखेनिधान॥ येणेचिगिकिलानलगतांक्षणा॥ तरियालह्युमणाचाप्राण॥
चेईनमिसमरंगणि॥५३॥ बैसेंबोलेनिलंकापति॥ धगधगिलकाठिलिशक्ति॥ गवसणि
काठितांचिद्विदि॥ तेजजसंभाव्यपसरें॥५४॥ किंउगवलेसहस्रमातें॥ तैशिशक्तिदि
सेतिवृषचंड॥ किंवाउभारलाकाकडें॥ संस्कारत्रयविश्वातें॥५५॥ किंतेप्रकृयाग्निचिशा
रवासबक॥ क्रिद्युतांतचिजिहातेजाक॥ किंतेमेघंतिलचपक॥ निवडुनिजैशिकाठिल
॥५६॥ किससकोटिमंत्रतेजपाहिं॥ येकवटवराकिचेठाई॥ तोमयदृशियवजावई॥ झुणे
नउचितदिधलि॥५७॥ तेमयशक्तिपाहिं॥ कधिंकोणावरटाकिलिनाहिं॥ सौमित्रावरि
तेसमई॥ रावणप्ररितापैजाला॥५८॥ न्याससहितजपानमंत्र॥ सोडुनिदिधलिसत्वर॥
नवखंड॥ पृथ्विअंबर॥ कांपोलागलेंतेधवां॥५९॥ सहस्रविजाकडकाडिति॥ तैशिधावलितेशक्ति॥

॥विजई॥
॥४॥

(5A)

अथेव्यापितासरितापति॥ अंगराकोपाहतिदिगज॥ ६०॥ देवविमानेनंपठविति॥
 गिरिकुंदरिवान्तरपठति॥ येकमुर्धनायेउनपडति॥ नउठतिमागत्याने॥ ६१॥ दोकि
 देठंभयातुर॥ पठेलागलेमाहविर॥ जोयाब्रह्माडासेदनारीर॥ तोरद्रावतारधवि
 न्नला॥ ६२॥ मारुतिमाहविरजगजेठि॥ धांवोनधरिलिचाममुशि॥ मोडवितेउठाउठि॥
 दिव्यरुपजाहलि॥ ६३॥ मगतेह्मणेमारुति॥ तुंब्रह्मचारिह्मणविशि॥ परस्त्रिस
 कांशेंबलाशि॥ सोडमजशिजाउंदे॥ ६४॥ मिरावणकन्यासाचार॥ आजिवीरनसै
 मित्रवर॥ सोडजाउंदेसवर॥ मुहुलवेजसासे॥ ६५॥ मारुतियेगिईद्रियजित॥ स्त्रि
 ह्मणानसेडिलिजकस्मात॥ तोतेजालिपुर्ववत॥ प्रठयकरितचालिलि॥ ६६॥ वान्तर
 दठिंआक्रांत॥ देवविमानिजालेभयाभित॥ ह्मणतिमयशकिह्मजहुत॥ कोणावीरपेडल
 पै॥ ६७॥ तेनह्मणालेलाक्षित॥ मनोवेगंशकियेत॥ तोशक्तिछेदावयासुमित्रासुत॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ५॥

⑥

बाणजाकर्णवोटिला ॥ ६८ ॥ जैशिवपकाकडकेजनि ॥ तैशिवहृदयावरिवैसेयउनि ॥ वक्षस्य
कचुरकरेनि ॥ जायनिघानपुष्टिदारे ॥ ६९ ॥ पृथ्वीमोडुनशक्तिगेलि ॥ पाताकाद्वैतज्ञ
तिजालि ॥ असोसैमित्रचितनुपजलि ॥ भुमिवरिनिचेष्टिल ॥ ७० ॥ मुदघटहोयजैसाचुण ॥
क्रिपन्कफणसपडेविदोरेन ॥ तैसासुमित्रचानंदन ॥ छिन्नभिन्नपडियेला ॥ ७१ ॥ तोंहा
क्रफेडिविभिषण ॥ गजवजिलसुग्रीवजाप ॥ सौमित्राजवकियेउन ॥ पाहोलेजालेतका ॥
किं ॥ ७२ ॥ अंगदनकनिकजाबुवंत ॥ सुखपरारभगवयहुनुमंत ॥ पाहोलेजालेतकाकिं ॥
॥ ७३ ॥ तोंहृदयविदारलंजसुल ॥ पुष्टिदारेरकुवाहृत ॥ नाशिकारिलवित्तिहात ॥ स्वा
सोस्वासराहिला ॥ ७४ ॥ भारतुजालेनयन ॥ बाणतैसाचवोटिलाजाकर्ण ॥ कानाडिता
उनलक्षुमण ॥ निचेष्टिलपडियेला ॥ ७५ ॥ प्राणनदिसेजगुमात्र ॥ बैसेंदेखेनिराजिव
नेत्र ॥ वक्षस्यकपिटोनशरिर ॥ भुमिवरिटांकिने ॥ ७६ ॥ सेवंचविभिषणंसांवरन ॥

॥ विजई ॥
॥ ५॥

(6A)

बैसविलाशितारमण॥ सौमित्रासमाडिवरिधेउन॥ रघुनाथवैसलातेकाकिं॥ ७५॥ सु
 खावरिठउनमुख॥ शोककरिखयाध्यानायक॥ क्षणेप्राणसखयागेष्टियेक॥ मजशिब
 लयेकहा॥ ७६॥ वारेनेत्रउघडुन॥ मजकेडेपाहेविलोकुन॥ तुंसकुमारबाठपुण॥ मरिलेंत्रि
 मुक्किकिर्तिने॥ ७७॥ चतुर्दशवसेषेवनवाशि॥ फेकंपुरविलेंबाह्याशि॥ म्यामरिलेंउप
 वाशि॥ येकेदिवशिंपुशिलेंनाहिं॥ ७८॥ नाराधराणिमनि॥ सखयाजातेशिरसेनि॥
 मिआपुलाप्राणत्यजुनि॥ येईनतुजसमायने॥ ७९॥ मिअयेष्टेशिजालांजाण॥ सुमि
 त्रापुसेललक्ष्मण॥ तिसमिकायसंगेवर्तमाना॥ नेत्रउघडुनिपाहेकां॥ ८०॥ त्रिमुवन
 जिंजिलेंईदजिते॥ तोनावरेचिआह्मति॥ तोरावणितुंवाशरपंथे॥ जर्जरकरनिमा
 रिला॥ ८१॥ तुजेदेवचिंतितिकल्माण॥ आजिसमरिक्केलेंशायन॥ तुजकारणेंमस्य
 शत्रुघ्न॥ यजितिप्राणसौमित्रा॥ ८२॥ ऐसाशोककरितारघुविर॥ जालायेकचिह्ना

॥ श्रीराम ॥
॥ ६३ ॥

कार ॥ तवरावणा नुज भक्त थोर ॥ बोलला जाता ते कवि ॥ ८६ ॥ ह्मणेश त्रुस मोर उभा
रण ॥ तुमि शोक करिता वक्ष्यणि ॥ ह्मणेश धर्म व्याप पाणि ॥ सहस्रानेक विचारिजे ॥
॥ ८७ ॥ वैरि उभा बसे जि समोर ॥ त्याशि पराजय यावास त्वर ॥ मग सै मित्राचा वि
चार ॥ कळेल तैसा करुपां ॥ ८८ ॥ नर विरजे धुनंदन ॥ सहसा भय नाहिल धुमणा
॥ शरधारि छेदित्यारवणा ॥ ह्मणेश चाप बाण दिधले ॥ ८९ ॥ उभारा हिलारण रंग
धिर ॥ जोराक्षस तपे वैश्वानर ॥ क्रिया सावया क्रिया अस मय ॥ छुतांत चिह्नो भले
॥ ९० ॥ आपठण करितां ते वेळि ॥ ह्मणेश आघात सकळि ॥ उर्विसहित शेष मं
उळि ॥ हुडबडिलि पाताळेशि ॥ ९१ ॥ रघोस माचा घोष देखोन ॥ गजसिंकुशार्दुळ
भुत गया ॥ बहुल होउन गतः प्राण ॥ कानना माजि पडियेले ॥ ९२ ॥ दाशरथिच्या हृद
यांत ॥ लोघसागर हलवत ॥ वज्रगण मांडि रघुनाथ ॥ जे सुतांत पाहोन रौके किं ॥ ९३ ॥

॥ विजई ॥
॥ ६३ ॥

ददं शकं वा शिखणेरधुनंदन ॥ लक्ष्मणावरिशक्तिटाकुन ॥ कौठं जाशिलतुं पकोन ॥
 करिनचुर्णवाणावरि ॥ ९४ ॥ सौमित्रपडलाहणान ॥ संतोषेदशमुखरावण ॥ त्याव
 रिरामपंचानन ॥ सरसवेनिधविनस ॥ ९५ ॥ भातांशरभरनेजेप्रबक ॥ जैसें शोष
 मुरिवं रुका रुक ॥ किंसमुद्रामाजिनडवानक ॥ किं मेघिंचपकाड्यापरि ॥ ९६ ॥ तेशर
 सोडितरधुपति ॥ येकाचक्रेटिक्रेटिहोति ॥ नटलटांतुटोनपडति ॥ राक्षसशिरेंतेका
 किं ॥ ९७ ॥ विकिंरिघतां विरवार ॥ तैसेरावण शिलागतिशर ॥ पिछें पसरति मयुरा ॥
 किंतुणा कुरपर्वति ॥ ९८ ॥ किंकनकफकावरिस्पष्ट ॥ कांटेतसेरतलेशरदाट ॥ रावण
 शरसोडिदेसेर ॥ परिनिर्झकहोउनपडति तें ॥ ९९ ॥ मातेवियाकैवोरं ॥ क्षेत्रिसंकुगिरिते
 फरशधेरं ॥ तैसासौमित्रपडतांरधुविरे ॥ असुरदकेंसंकुगिरिलें ॥ १०० ॥ उरगसंकु
 रिवैनतासुत ॥ किंशं करंज किलेंत्रीपुरातें ॥ किंप्रकयजग्निनेश्रुष्टितें ॥ प्रकयकाकिं

॥ श्रीराम ॥

॥ ७ ॥

८

संकरिजे ॥ १ ॥ किंतारकासुरत्वेदक ॥ शडाननेमदिलेसकक ॥ किंमार्तंतमिरजाक ॥ किंमा
डुनटाकिले ॥ २ ॥ किंशक्तेनगवेलेचुरा ॥ किंज्ञानेभवभयसमय ॥ किंनामपापसंकार ॥ जे
साहोययेकदांचि ॥ ३ ॥ प्रतापकिरघुनंदन ॥ विध्वंशिलिंबरितारागणे ॥ जेविंप्रयगिं
आयेकश्चाने ॥ कोटिजन्माचिपापेंजकति ॥ ४ ॥ प्रभंजनरामतमालनिळ ॥ विदरिलेंरि
पुजकदजाक ॥ लेकाकितिपडलेराक्षसदंड ॥ गणिलकेलेवाल्मिके ॥ ५ ॥ दाहासहस्र
वारणमत ॥ नियुततुरंगश्चारांसहित ॥ दशसहस्रमाहारथा ॥ सारथियांसहितपडलि
लेकां ॥ ६ ॥ शतकोटिपडपायदक ॥ लेकायककृबध्दुटसक ॥ जैशिकोटीकबधेवि
शाक ॥ जेकांनाचलिरंगागणि ॥ ७ ॥ रामकैदडाचिकिंकिणि ॥ येकदांवाजेतयेक्षणि ॥
चौदाहिंढारणागणि ॥ वाजोलागलात्तधवां ॥ ८ ॥ येकबर्धयामपरियंत ॥ धंटाघ
णघणाल्लासमस्त ॥ राक्षसपडलेअसंख्यात ॥ शेषासहिगणितनके ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

॥ विजय ॥

॥ ७ ॥

वेदांतशास्त्रगर्जेप्रचंड॥ तैसें झणकारले रामको दंड॥ पाषांडितक्येति विलंड॥ रावणचापतेवि
 वाजे॥ १९०॥ जैसे सन्मर्गि वर्ततिसंत॥ तैसे रघुनाथाचे बाण येत॥ वामिकोळि कळज मक॥ तैसे रा
 र्यति रावणचे॥ १९१॥ असो रामे घालितो बाण जाक॥ तटस्तजाले राक्षस पाक॥ तो रामरूपस
 कक॥ दोन्ही देवें दिसो लागिले॥ १९२॥ कोटयानुकोटि रघुविर॥ दिसति मोकलिलि बाणाचा पु
 रा॥ दशदिशा विलेकिलि दशवत्र॥ दशरथ कुमर दिसति॥ १९३॥ मार्गे पुढें सव्य काम॥
 दिसति धनुर्धर श्रीराम॥ राक्षस वानर धनशाम॥ रुपें दिसति लेकाळि॥ १९४॥ अंतरि पाहे
 जों रावण॥ तो उभा असे जग नमोहन॥ मनुष्यी चितकारण॥ रामरूप जाहोले॥ १९५॥ दश
 ईंद्रिये पंचप्राण॥ पंचभुते पंचविषय जाण॥ चरि देह भोग निवस्थास्थान॥ रामरूपि जा
 होलि॥ १९६॥ जैसा अंतरि राम दिसे सर्वत्र॥ रावण उद्युन पाहनेत्र॥ तो रथसारथि ध्वज
 चापशर॥ रघुविररूप सर्व दिसे॥ १९७॥ रथाजवळि राम संघटने॥ रथावरि चढेन जाले॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ८ ॥

(९)

अंतरबाह्यरामेव्यपिले ॥ ठावनदिसेबैसावया ॥ १८ ॥ अणुरेणुपासुनब्रह्मपरियंत ॥ अव
द्याव्यापिलारधुनाथ ॥ मगरास्त्रकादुनमयजाकांत ॥ रथान्बोलेंउडिधलि ॥ १९ ॥ तोंरामर
पदिसेधरणि ॥ भयेंपकततयेक्षणि ॥ मागेपाहेलेंअसुनवाहिनि ॥ धावतचियेतसे ॥ २० ॥
अरेहेरामजालेहणोन ॥ भयेंहाकफेडिरावण ॥ पुढेंपाहेजोंविलेकुन ॥ तोंलंकारामरप
दिसे ॥ २१ ॥ दुर्गहुडेचर्याककस ॥ त्याचरितुमायेयाध्याधिशा ॥ अडरवकोनपडेलंकेश ॥
उठोनपकतमायुति ॥ २२ ॥ असोरावणमदिरात ॥ पळोनगेलापिशाचवत ॥ मंदोदरीजव
कबैसत ॥ सांगेसमस्तसमाचार ॥ २३ ॥ अणुपरमपुरुषार्थकानन ॥ रणिमारिलालक्षु
मण ॥ मगरामेंव्यपिलेंजनवन ॥ मिपकेनयेथेंजालें ॥ २४ ॥ मासियेजागिंचेंअयवारे ॥
अजुननजायेचसुंदरे ॥ जेविकरंउचिकस्तुरिसरे ॥ परिमागेउरेमकरंद ॥ २५ ॥ त्रिसुभा
सुभकमेप्राणिकरिति ॥ मागेउरेजैशिकिति ॥ किंसायंकठिनसतांगमस्ति ॥ अरक्ततामागेउरे ॥ २६ ॥

॥ विजई ॥
॥ ८ ॥

किं प्रचउमास्तवोसरे ॥ परितरंवरिहेलावाउरे ॥ किनहिउतरलियायेकसरे ॥ मागेउरेवा
 रीजैशि ॥ २७ ॥ नसो नसुरगुरजोमुघ ॥ तेणेकाळमुत्यजयमंत्र ॥ मजहिधलासेपवि
 त्र ॥ करिनत्याचें अनुष्ठान ॥ २८ ॥ मंदोदरीहोपेदशमुख ॥ अर्थ अनुष्ठान करं नक्र ॥
 अजुनतरिमदनांतका ॥ सरवा ॥ मित्रकराजापुला ॥ २९ ॥ अथवासमरिंबांधाविक्रास ॥
 युध्यचकराबहुवस ॥ परितो नमनिनकरा ॥ द्योतकर्मशिप्रवर्तला ॥ ३० ॥ होमकरावया
 तेकाविं ॥ मुमितगुसगुहाकेरिलि ॥ त्यामजिबैसलादशमैठि ॥ सामयिसकळयेउनि
 यां ॥ ३१ ॥ काळनेमिनिशाचर ॥ त्यशिजाजापेदशकंदर ॥ द्रोणाद्रिजाणावयाजाईलवा
 युपुत्र ॥ तरितुं पुढें सत्वरजायें ॥ ३२ ॥ त्यासवोटसविघ्नकरन ॥ हिरोनछावगिरिद्रोणा ॥
 नुमंतासआशिंमारन ॥ वोटसटांकापुसपार्थ ॥ ३३ ॥ नानायेत्नकरन ॥ वोटसगेवावा
 युनंदन ॥ निशांतिउगवतांचंउक्तिर्ण ॥ जाईलप्राणलक्ष्मणाचा ॥ ३४ ॥ यावीरिकाळनेमितेवेका ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ११ ॥

ॐ

द्युनराक्षसांचामेका ॥ वोटसजाउनबैसला ॥ मित्रवेशधरेनियां ॥ ३५ ॥ जसेईकेडेरघु
नंदन ॥ सौमित्रजवकियेउन ॥ टाकुनियां धनुषबाण ॥ बोल्योरबारंमिता ॥ ३६ ॥ तवै
दराजसुरेवण ॥ विलेकितसौमित्रचंचिक ॥ हणेशुर्यउगवतांचित्राण ॥ जाईलबिम्बोत ॥ विजई ॥
ययाचा ॥ ३७ ॥ द्रोणाचकिपियुषवक्त्र ॥ कैणिबकियाबाणिलेयेवेकिं ॥ तरिसौमित्रयच ॥ ११ ॥
काकिं ॥ उठउनकरिनपुर्ववत ॥ ३८ ॥ आरकेरियाजनजाउन ॥ रात्रितबाणाव्याबापधिपु
र्ण ॥ बैसैबैकतांरघुनंदन ॥ विलेकितसवकपिकेडे ॥ ३९ ॥ कार्यनसाधेहणोन ॥ वानरपा
हतिबधोवहन ॥ तटस्तपाहेशिताडिना ॥ तैचिंनिरक्षरतसे ॥ १४० ॥ समयदेखेवनपर
मकठिण ॥ जोनिर्वाणित्वासरवाजाण ॥ भुगर्भरत्नशेकृहारण ॥ उभागकलातेकाकिं ॥ १४१ ॥
साष्टांगनमुनजनकजामात ॥ हणेशिमुवनपतिनकरविचिंत ॥ त्रिलियप्रहरनभरतां ॥
द्रोणाचकाशिबाणितों ॥ १४२ ॥ श्रीरामबोलबानंदोन ॥ सौमित्रतुसायचक्रपुर्ण ॥ त्यशिदेउनप्राणदान ॥

सडकरउगविंदयाका॥४३॥ तैसैबैकनंविहनुमंत॥ जययशस्वीनयोध्यानाथ॥ झणोनउडाला
 बकस्मात॥ उत्तरपंथेंबाकशिं॥४४॥ मनासप्रार्थुनतेहणि॥ ठेविलेंलेकांरामचरणि॥ जैसे
 प्राणसज्जनानेसहीन॥ प्रियठेवनेठेविले॥४५॥ सागरामजिमिकेलवण॥ किंजाकाशिंलि
 नहोयपवन॥ तैसैरामपदिमनमेकउन॥ वायुनंदनधाविनला॥४६॥ पितियागतिसंजुनमा
 गें॥ हनुमंतनभपावेवेगें॥ किंतेउरंगातिरंगिंवेगें॥ हिराब्धिप्रतिजातसे॥४७॥ मस्किं
 लांगुठवाहुन॥ घेतउडाणावीरउडाणा॥ जयजयरधुराजझणोन॥ वारंवारस्मरणकरि॥
 ॥४८॥ घटिकानमरतांपुर्ण॥ गेलस्यसाधुचालांजुन॥ तोंद्रोणाचकाबालिकडेजाण॥
 चेंद्राचठहेरविला॥४९॥ किंक्षिरसागरमथुनसबक॥ काढिलानवनिताचागेक॥ किं
 शेषशईतमालनिक॥ तेणेठेवणेठेविले॥५०॥ किंनिदोषयशब्जपुलें॥ क्षिरसिधुनं
 तेथेंठेविले॥ किंपुष्टितुनउगविले॥ श्वेतोत्पकसजिरें॥५१॥ रह्यबवधेसहाफक॥५२॥

॥ श्रीराम ॥

॥ १९०१॥

(११)

सरोवरे मरलि निर्मल ॥ यज्ञशाला तेथे विना ॥ कुंडवेदी कायथा विधी ॥
॥ ५३ ॥ असो त्या आलि कडे येक येक जन ॥ काळ नेमी जाला ब्राह्मण ॥ राक्षस
॥ शिष्य करुन ॥ आश्रम तेथे रची येला ॥ ५४ ॥ यज्ञपात्रे बहुत ॥ कुडा भोव
ति शोभत ॥ समिधाद्रव्येयथायुक्त ॥ करुन सीद्ध ठेविलि ॥ ५५ ॥ घातले स
अन्न छत्र ॥ ऐसा तो काळ ॥ नेमी निराश्वर ॥ बकध्या नवत साचार ॥ वाट पा
हे मारुति चि ॥ ५६ ॥ वरी वरी शोभे बंधु वावुन ॥ कीदा मिका चे शुष्क भजन ॥
किंकासार प्रतिमा ठेवुन ॥ वीका चया बेसले ॥ ५७ ॥ नोइत कोया तवायु सु
त ॥ तृणाक्रांत पावला त्वरीत ॥ तो कपटी आला धावत ॥ नमन करीत मारुति
शि ॥ ५८ ॥ त्मणे आमुचे भाग्य धन्य ॥ जाले माहापुरुषाचे दर्शन ॥ त्मणे स्वा
मि दया करुन ॥ आजिये ये क्रमावे ॥ ५९ ॥ दुर्लभ तो चे दर्शन सत्य ॥ राहो वेयेक

॥ बीजई ॥

॥ १९०१॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com